गृहयुद्ध
मन्मथनाथ गुप्त

नौआखाली, कलकत्ता और बिहार की रोमांचक पाशविक घटनाओं के बाद आज हमें यह सोचना पड़ रहा है कि भारत के इन दो महानधर्मों में कभी समन्वय होगा भी या नहीं। समन्वय, प्रेम और आनन्द की जन्म-भूमि भारत में आज धर्म और जाति के नाम पर जो हाहाकार मचा हुआ है वह हमें किधर लिये जा रहा है? एक हजार वर्ष पहिले

एक घर में नहीं रह सकते? क्या नौआखाली में गाँधी की तपस्या व्यर्थ जायगी?

ये हैं प्रश्न। और इनका उत्तर है यह नया उपन्यास गृहयुद्ध।

मूल्य ३।)